राज्य जलवायु परिवर्तन केंद्र द्वारा वनमण्डल महासमुंद में एक दिवसीय कार्यशाला सह क्षेत्र भ्रमण का आयोजन

''Climate Adaptation in Wetlands along the Mahanadi River Catchment Area in Chhattisgarh'' परियोजना के सुचारु क्रियान्वयन हेतु राज्य जलवायु परिवर्तन केंद्र, रायपुर द्वारा परियोजना ग्राम मरौद, वनमण्डल महासमुंद में दिनांक 25/07/2018 को एक दिवसीय कार्यशाला सह क्षेत्र भ्रमण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में परियोजना के बेहतर क्रियान्वयन हेतु परियोजना से संबंधित समस्त क्षेत्रीय विभागों के स्थानीय अधिकारी, कर्मचारी, ग्रामीण जन समुदाय एवं परियोजना क्षेत्र के वन प्रबंधन समिति सदस्य एवं स्थानीय जन प्रतिनिधि आदि की उपस्थिति रही। कार्यशाला सह क्षेत्र भ्रमण कार्यक्रम में कुल 63 प्रतिभागी उपस्थित रहे।कार्यशाला सह क्षेत्र भ्रमण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री आलोक तिवारी, वनमण्डलाधिकारी, महासमुंद, कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती अमरौतिन बाई ध्रुव, सरपंच, ग्राम पंचायत, मरौद द्वारा की गई। इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि एवं राज्य जलवायु परिवर्तन केंद्र के प्रतिनिधि के रुप में डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव, रिसर्च एसोसिएट एवं श्री के. जी. मनोज, डी. डी. एम., नाबार्ड के प्रतिनिधि के रुप में उपस्थित रहे। श्री विश्वनाथ मुखर्जी, वन परिक्षेत्राधिकारी, महासमुंद द्वारा कार्यशाला कार्यक्रम में मंच संचालन किया गया। कार्यशाला सह क्षेत्र भ्रमण कार्यक्रम का शुभारंभ श्री विश्वनाथ मुखर्जी, वन परिक्षेत्राधिकारी, महासमुंद के अभिभाषण एवं दीप प्रज्जवलन तथा सभी अधिकारियों को पुष्प गुच्छ से स्वागत उपरांत प्रारंभ हुआ।

कार्यशाला के प्रथम उद्बोधन में राज्य जलवायु परिवर्तन केंद्र से डॉ. अनिल कुमार श्रीवास्तव, रिसर्च एसोसिएट द्वारा जलवायु परिवर्तन से संबंधी विस्तृत जानकारी उपस्थित प्रतिभागियों को दी गई। क्षेत्र में संचालित जलवायु अनुकूलन परियोजना का परिचय एवं जलवायु परिवर्तन के विपरीत प्रभावों को कम करने पर विभिन्न विभागों की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की गई। साथ ही उपस्थित विभागीय अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा जलवायु परिवर्तन अनुकूलन विषय पर अपेक्षित कार्यों के क्रियान्वयन पर विस्तार से जानकारी प्रदान की गई। पशुपालन विभाग से डॉ. विश्वेश्वर पटेल द्वारा परियोजना क्षेत्र में उपस्थित पशु चिकित्सा केंद्र में पशुधन विकास सुविधाओं से ग्रामीणों को अवगत कराया गया एवं थ्डक के बचाव के उपायों पर चर्चा किया गया। डॉ. पटेल द्वारा बताया गया कि ग्रामीण क्षेत्र में बिचौलियों एवं अन्य क्षेत्र से आने वाले पशुओं से विभिन्न प्रकार की संक्रामक बीमारियों का प्रकोप ग्राम के पालतू जानवरों एवं जंगली जानवरों में फैलने की संभावना रहती है। इस पर स्थानीय स्तर पर रोक लगाने की आवश्यकता है एवं उन्नत नस्ल के पशुपालन पर विस्तार से जानकारी प्रदाय की गई।

वनमण्डलाधिकारी द्वारा पशु, कृषि एवं अन्य संबंधित विभागों में परियोजना क्षेत्र हेतु कार्य योजना तैयार पर जोर दिया गया। उनके द्वारा बतलाया गया कि यदि कोई किसान विभागीय योजनाओं का लाभ पाने में वंचित रह जाता, उन्हें इस योजना अंतर्गत चिन्हांकित कर कार्य योजना प्रस्तुत करने को कहा गया है। वनमण्डलाधिकारी द्वारा महिला स्वसहायता समूहों के विकास पर बल देते हुए उनके लिए एवं किसानों के समूह को मजबूत बनाने के उद्देश्य से आर्थिक मदद के रुप में प्रदाय किए जाने वाले चक्रीय निधि के वितरण पर बल दिया गया। साथ ही समस्त विभागों को परियोजना क्षेत्र के विकास पर सहयोग देने हेतु आह्वान किया गया एवं विभागों को अपनी–अपनी कार्य योजना तैयार कर प्रस्तुत करने को कहा गया।

कार्यक्रम में उपस्थित स्थानीय जन समुदाय से विभिन्न विभागीय प्रतिनिधियों द्वारा स्थानीय समस्याओं के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। कार्यक्रम के अंतिम चरण में वनमण्डलाधिकारी, श्री आलोक तिवारी द्वारा कार्यशाला सह क्षेत्र भ्रमण कार्यक्रम में उपस्थित समस्त प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया गया। वनमण्डलाधिकारी द्वारा जलवायु परिवर्तन वर्तमान समय में उत्पन्न हो रहे विपरीत पारिस्थितिकीय परिवर्तन से बचने हेतु जलवायु

अनुकूलन की रणनीतियों को सहायक एवं सुरक्षात्मक हितकर बताया। उनके द्वारा किसानों की आए में वृद्धि आने के उपयोग पर प्रतिभागियों से चर्चा की गई, जिनमें मुख्यतः मधुमक्खी पालन, मशरुप उत्पादन इत्यादि आजीविका गतिविधियों को अपनाने पर बल दिया गया। धन्यवाद अभिभाषण उपरांत कार्यशाला सह क्षेत्र भ्रमण कार्यक्रम के समापन की घोषणा की गई।

—:0:—